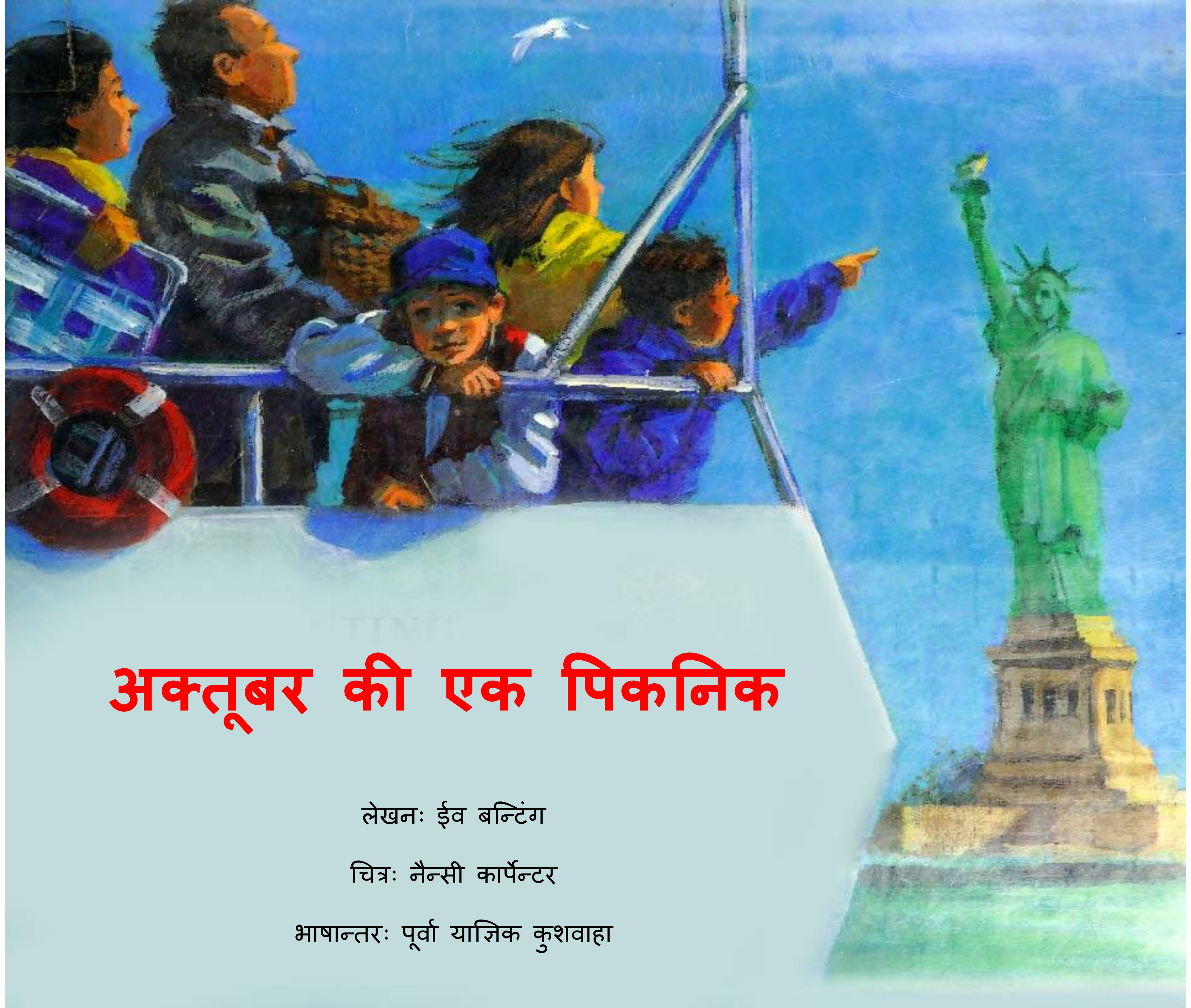


अक्तूबर की एक पिकनिक

लेखनः ईव बन्टिंग

चित्रः नैन्सी कार्पेन्टर

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

टोनी को लगता है कि अक्तूबर में पिकनिक करना हद दरजे की बेवक़ूफ़ी है।

उसे यह भी लगता है कि पिकनिक के लिए लिबर्टी आइलैंड जाना भी निहायत बेवक़ूफ़ी भरा काम है।

अव्वल तो वह बहुत दूर है। साथ ही मौसम ख़ासा ठंडा है। और फिर वहाँ जो कुछ वे करते हैं, वह उसे शर्मिन्दा भी करता है।

पर ऐसा वह यह समझने के पहले सोचता है कि स्टैच्यू ऑफ लिबर्टी (आज़ादी की प्रतिमा) उसकी दादी के लिए क्या मायने रखती है।



अक्तूबर की एक पिकनिक



लेखनः ईव बन्टिंग

चित्रः नैन्सी कार्पेन्टर

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा



बैरी मोरेनो, लाइब्रेरियन, लिबर्टी आइलैंड के लिए,
जिनके पास बांटने के लिए बहुत ज्ञान है।
- ई.बी.

कैरल को,
- एन.सी.



डैड, मॉम और मैं बैटरी पार्क जाने वाली बस में चढ़े । हम सालगिरह की पिकनिक का सामान उठाए थे। मॉम के पास केक था।

दिन 28 अक्तूबर का था, कड़क और ठंडा। सचमें ठंडा।

"हमें हमेशा यह क्यों करना पड़ता है?" मैंने नाखुशी से मॉम से पूछा। "अक्तूबर में पिकनिक मनाना बेवक़ूफ़ी है!"

"दादी यही चाहती हैं," मॉम ने जवाब दिया।

बस, बात यही ख़त्म हो जाती है।

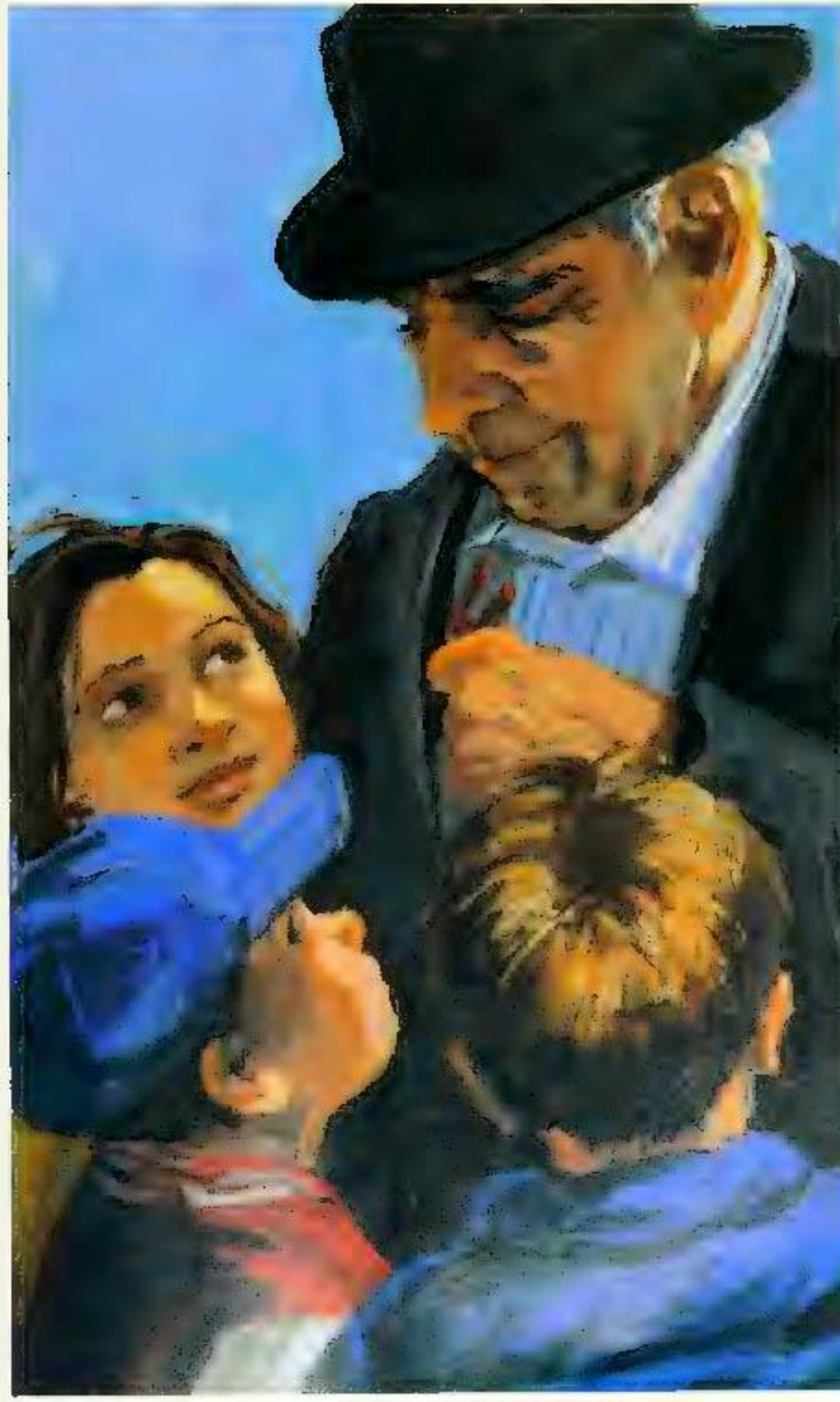


जब हम बैटरी पार्क पहुँचे, मुझे दादी फ़ौरन नज़र आ गईं। वे अपना चटक हरा कोट पहने थीं। उनके गले के गिर्द नकली रोओं के कॉलर को हवा हिला रही थी। उनके साथ दादा, चचा माइक और चाची लूईस थे। और थे मेरे चचेरे भाई-बहन रोज़ा और माइक। वे लोग भी पिकनिक का सामान लादे थे।

हम सब गले लगे और हमने एक-दूसरे को चूमा।

दादा ने अपने ओवरकोट की अन्दरूनी जेब से मुलैठी का मीठा निकाल कर थमाया, जिसे वे एक कतार में वहाँ रखते हैं, जहाँ लोग अमूमन अपने पेन रखते हैं। वे हमेशा की तरह अपना काला टोप पहने थे।

रोज़ा कहती है कि वे सोते समय भी उसे पहने रखते हैं। पर मुझे ऐसा नहीं लगता।



"हमें जल्दी से फैरी (नाव) की कतार में लग जाना चाहिए" चाची लूईस ने कहा। मैंने कतार को देखा। मैं समझ गया कि हमें काफ़ी देर तक इन्तज़ार करना होगा। हम खुद को गरमाने के लिए अपने पैर पटकने और हाथों पर फूंक मारने लगे।

सामने टापू पर, स्टैच्यू ऑफ लिबर्टी (आज़ादी की प्रतिमा) खड़ी थी। सफ़ेद और चमकदार।

"कई सालों पहले वह एकदम सजी-धजी दिखती थी," दादी ने कहा। "पर उसकी उम्र के हिसाब से, आज भी अच्छी ही दिखती है।"

दादा ने हौले से दादी के गालों को सहलाया। "ठीक तुम्हारी तरह," वे बोले। दादा सचमें भावुक हो सकते हैं।

अब केक माइक ने पकड़ा हुआ था, जो अपने पारदर्शी डब्बे में था। "पिछले साल की बात याद है? याद है जब हम उस केक पर सारी मोमबत्तियाँ लगाने की कोशिश कर रहे थे?"

मैंने हाँ में सिर हिलाया, "इस बार हम सिर्फ़ दस लाए हैं। दादी का कहना है कि जब कोई बूढ़ा हो जाता है, तो उसे इसकी परवाह नहीं होती कि हर साल के लिए एक मोमबत्ती है या नहीं।"





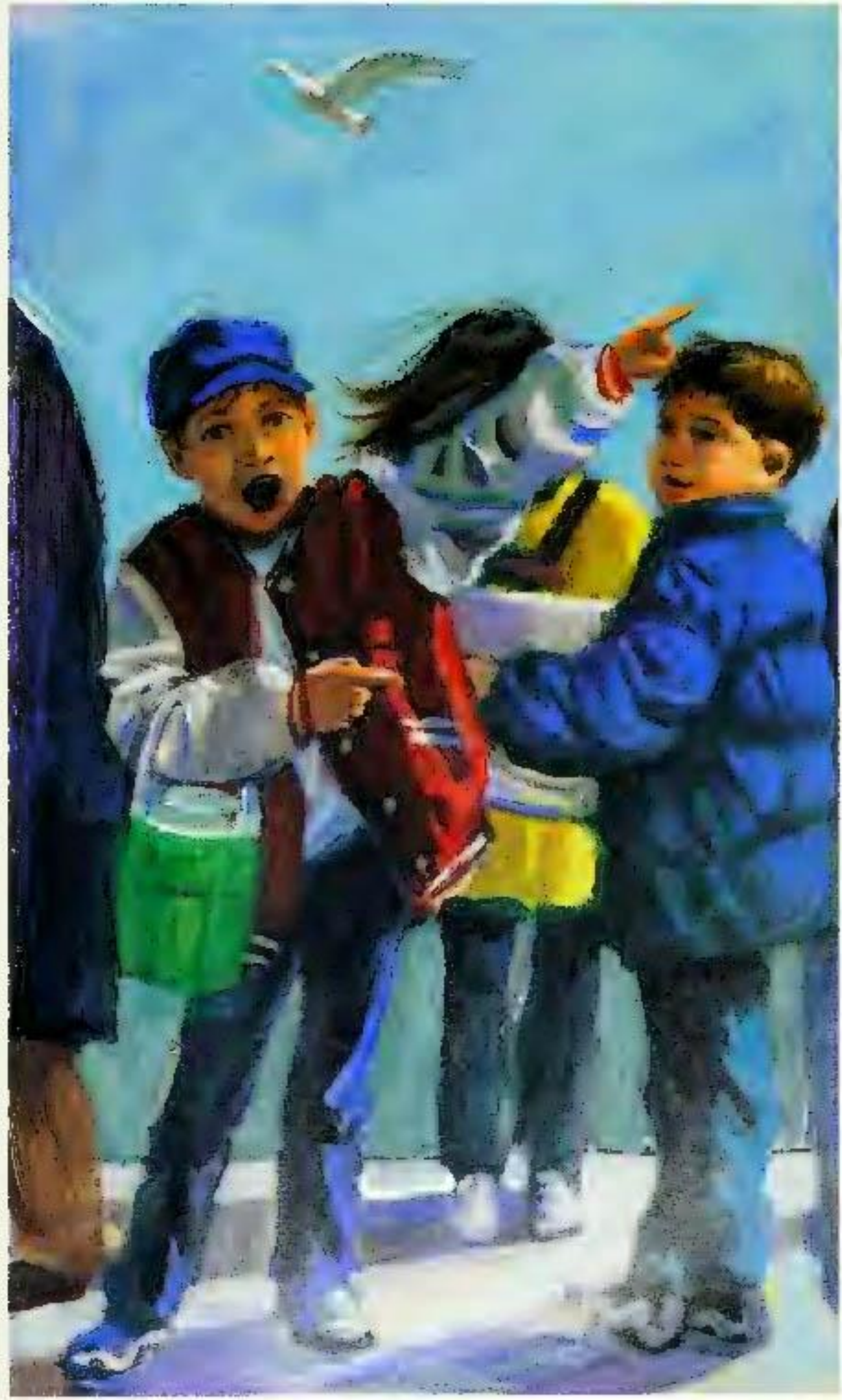
अचानक काले बालों की मोटी चोटी वाली एक महिला ने मेरी आस्तीन खींची। वे अपने कोट के नीचे एक लम्बा रंग-बिरंगा स्कर्ट पहने थीं जो फ़र्श को छू रहा था। उनके साथ एक लड़की और एक पुरुष था, जिसकी ढ़ीली पतलून हवा में फड़फड़ा रही थी। महिला ने फिर से आस्तीन खींची और फैरी की ओर इशारा किया, जो घाट से दूर बढ़े जा रही थी। वे कुछ कह रही थीं, पर मुझे उनके शब्द तो समझ नहीं आए, पर यह समझ आ गया कि वे फ़िक्र कर रही हैं।

"वे क्या कह रही हैं?" माइक ने पूछा।

"मुझे लगता है कि उन्हें फ़िक्र हो रही है कि नाव चली गई है।"

मैं उनकी ओर मुड़ा और मुस्कुराया। "कोई बात नहीं," मैंने कहा, "इसके बाद दूसरी नाव आएगी।" मैंने नाव की ओर इशारा किया, फिर अपना हाथ घुमा कर उसके लौटने का इशारा किया। "एक और नाव आएगी।"

वे मुस्कुराईं और अपना सिर हिलाया, मुझे लगा कि वे मेरी बात समझ गई हैं और बेहतर महसूस कर रही हैं।



माइक ठिठियाने लगा। "यार! तुम अपना हाथ हिलाते तीसरे बेस के अम्पायर जैसे लग रहे थे। एकदम बेवकूफ़।"

"बदतमीज़ी मत करो माइक," दादी ने टोका। "टोनी मेहरबानी कर रहा था। पर तुम बदतमीज़ी।"

मैंने अपने कान ऊपर-नीचे नचाए, और माइक हंस पड़ा। दादी ने उसे फिर सख़्ती से देखा।

अगली नाव आ गई और हम सब किसी तरह उसमें घुस गए। मैंने अन्दर पहुँच उस महिला और उसके परिवार को तलाशा, पर लगता है कि वे चढ़ नहीं सके होंगे। काश उन्हें अगली नाव मिल जाए।





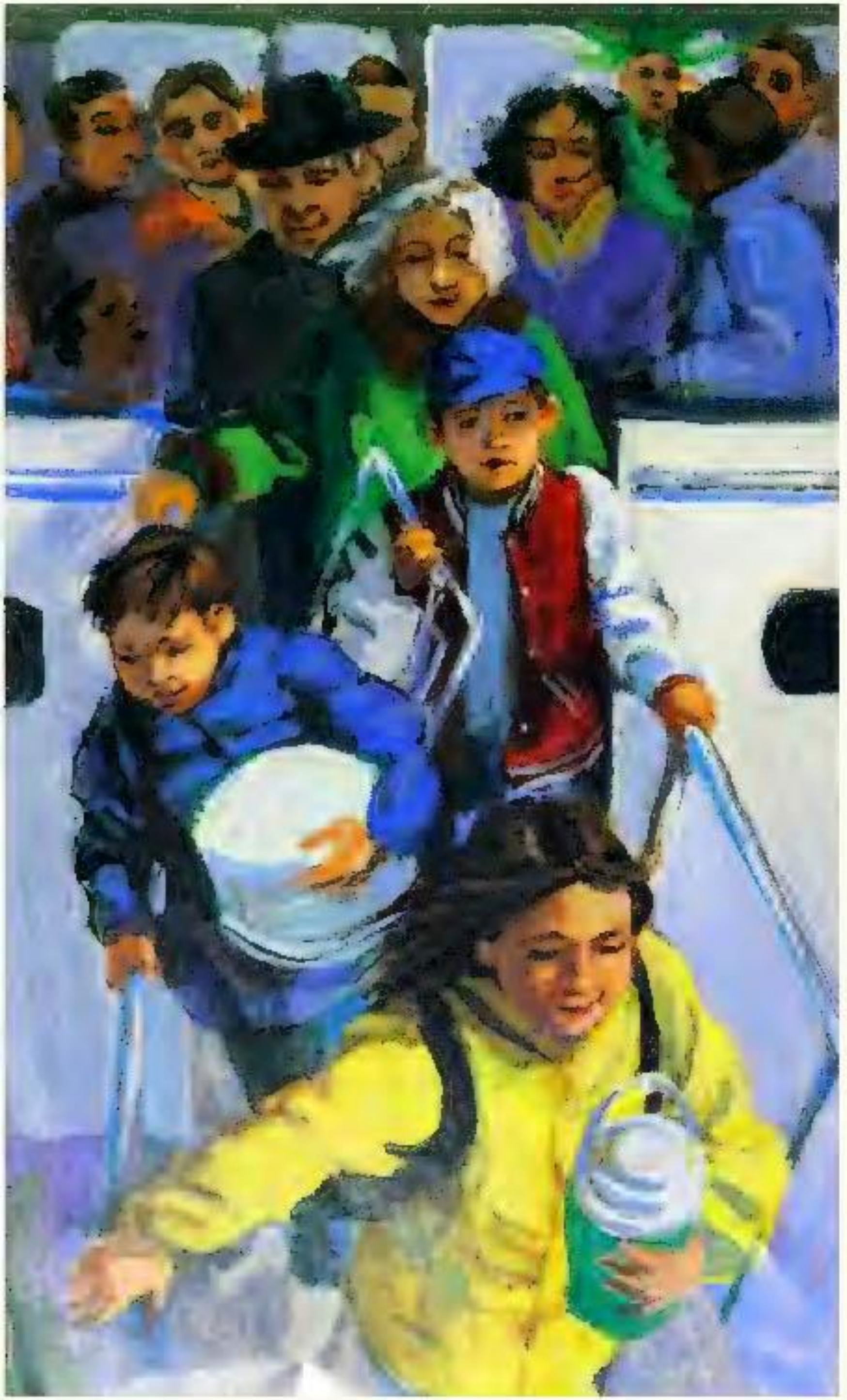
बड़े लोग जल्दी से नाव के कक्ष में अन्दर घुसे, जो गरम है। पर हम अपना सामान रख नाव के ऊपरी हिस्से में दौड़े, जहाँ कोई नहीं था। हमने यों नाटक किया कि हम रेलिंग के ऊपर से कै कर रहे हैं। तब हम थूक कर यह देखने लगे कि वह उड़ कर किस पर गिरती है। पता है, किसी पर थूक गिरे तो उसकी किस्मत अच्छी होती है!





लिबर्टी टापू पास आ रहा है।

मूर्ति का आकार बड़ा होता जा रहा है।



टापू के घाट पर हम पिकनिक के समान से लदे-फदे उतरते हैं।

टापू पर खासी भीड़ है, पर डैड एक घास से भरी जगह तलाश लेते हैं और बड़े लोग वहाँ कम्बल बिछाते हैं। पर हम तीनों भागा-दौड़ी में लग जाते हैं।

"वह वेराज़ानो पुल है," मैं कहता हूँ।

माइक दूसरी ओर इशारा कर कहता है, "देखो, वह ब्रुकलिन है।"

माइक और रोज़ा वहीं तो रहते हैं।

हवा की तेज़ी में पाल वाली नावें ऊपर-नीचे होती दिख रही हैं।

"और वह एलिस द्वीप है," रोज़ा पढ़ाकू शैली में बोली। "एक करोड़ सत्तर लाख प्रवासी उस द्वीप से अमरीका आए थे। हमने यह स्कूल में सीखा है।"

"यह तुमने पिछले साल भी बताया था," मैंने कहा।

"तो?" रोज़ा बुरा मान कहती है।



"टोनी, रोज़ा माइक!" डैड आवाज़ लगाते हैं।

"लो, खाने का समय हो गया," माइक ने कहा।

हम सब कम्बलों पर बैठ गए, सिवा दादा-दादी के। हम उनके लिए फोल्डिंग कुर्सियाँ लाए हैं।

टन भर खाना है हमारे सामने।

हमारी कागज़ की तश्तरियाँ उड़ने लगती हैं। हमने उन्हें पकड़ फ्रिसबी की तरह फेंकने की कोशिश की। पर हवा उन्हें दूसरी ही दिशा में ले गई। हम उनके पीछे दौड़े, उन्हें पकड़ कर कचरे दान में फेंकना पड़ा। जिंजर एल (अदरक वाला सोडा) इतना ठंडा था कि मेरे गले में जलन होने लगी।



लेडी लिबर्टी अपनी शान्त और बूढ़ी आँखों से नीचे हमें देख रही थी।

"अपना हाथ यों उठाए हुए वह थक नहीं गई होगी?" रोज़ा ने कहा।

"रहम करो रोज़ा, वह असली नहीं है," मैं खीज कर बोला।

दादी की भौं चढ़ गई। "वह ज़िन्दा इन्सान नहीं है, अगर यही तुम्हारा मतलब है। पर असली तो वह है। और वह ख़याल भी बिलकुल असली है जिसका वह प्रतीक है।"

वे दादा को देख मुस्कुराईं और बोलीं, "जन्मदिन का समय हो गया है। मोमबत्तियाँ जलाओ लूईगो।"



हवा ने उन सारी माचिसों को बुझा दिया जो दादा ने जलाईं। उसके ज़ोर से मामबत्तियाँ स्टैटन टापू की ओर झुक गईं और उनके अन्दर के धागे केक की फ्रॉस्टिंग में धंसने लगे। हमने उन्हें सीधा किया और मोमबत्तियों और हवा के बीच आड़ बनाई।

यह करिश्मा ही था कि वे तब भी जलती रहीं जब डैड ने केक उठाया ताकि दादी फूंक मार उन्हें बुझा सकें। हमने जैसे ही अपने हाथ हटाए वे एक ही फूंक में फट से बुझ गईं।

"ब्रावा बैला!" दादा ने ज़ोर से कहा। "इतालवी भाषा में ब्रावा का मतलब होता है तुम 'अद्भुत' हो, और बैला का मतलब है, 'सुन्दर'।" दादा फिर से भावनाओं में बह रहे हैं।



डैड ने हमारे कागज़ के प्यालों को फिर से भरा। हम सब लेडी लिबर्टी की ओर मुड़ कर चिल्लाए, "सालगिरह मुबारक हो!" तब हमने अपने प्याले एक-दूसरे के प्यालों से छुआए और एक घूंट भरा।

"जब मैं अपने पुराने देस से आई थी," दादी ने बताया, "मैं इस टापू पर आई और मैंने कहाः शुक्रिया लेडी लिबर्टी! मुझे आने देना का शुक्रिया! बेशक मैं इतालवी में बोली, पर वे सारी भाषाएं जानती हैं। यह अमरीका है, और मैं इसका हिस्सा हूँ, मैंने फ़क्र से सोचा था।"

"मुझे तुम अपने थके-हारे, ग़रीब-गुरबे दो,

तुम्हारी जमा भीड़ दो, जिसमें आज़ादी से साँस लेने की ललक हो ...."

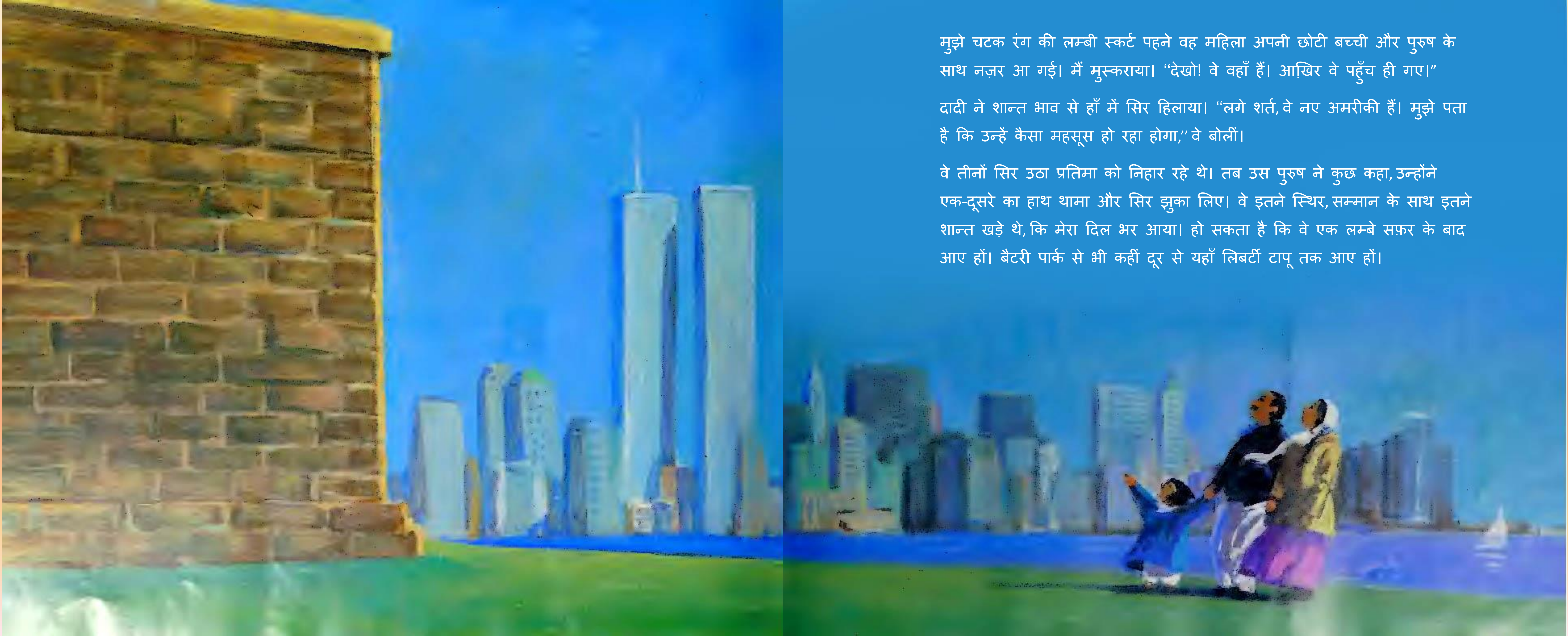
कविता में और भी बहुत कुछ था। दादी हर साल लेडी लिबर्टी की सालगिरह पर इस कविता का पाठ करती थीं। उन्हें वह कंठस्थ हो चुकी थी। रोज़ा को भी रट चुकी थी। और वह इस बात की शान बघारती थी।

दादी ने प्रतिमा की ओर हवा में चुम्मियाँ उड़ाईं, सो हमें भी यह करना पड़ा। मैं मन ही मन सोच रहा था, "काश हमें कोई देख न ले।"



तब हमने अपना बचा-खुचा खाना समेटा और टापू के उस ओर गए जिसे मॉल कहा जाता है। वहाँ भी सालगिरह का जश्न मनाया जा रहा था। एक वाद्य-वृन्द संगीत बजा रहा था, विदेशों में हुए युद्ध के वैटरनों का जुलूस था। क्या जश्न मन रहा था लेडी लिबर्टी के लिए! हम कुछ देर वहाँ रुके, नज़ारे का लुत्फ़ लिया, तब वापस लौटे।

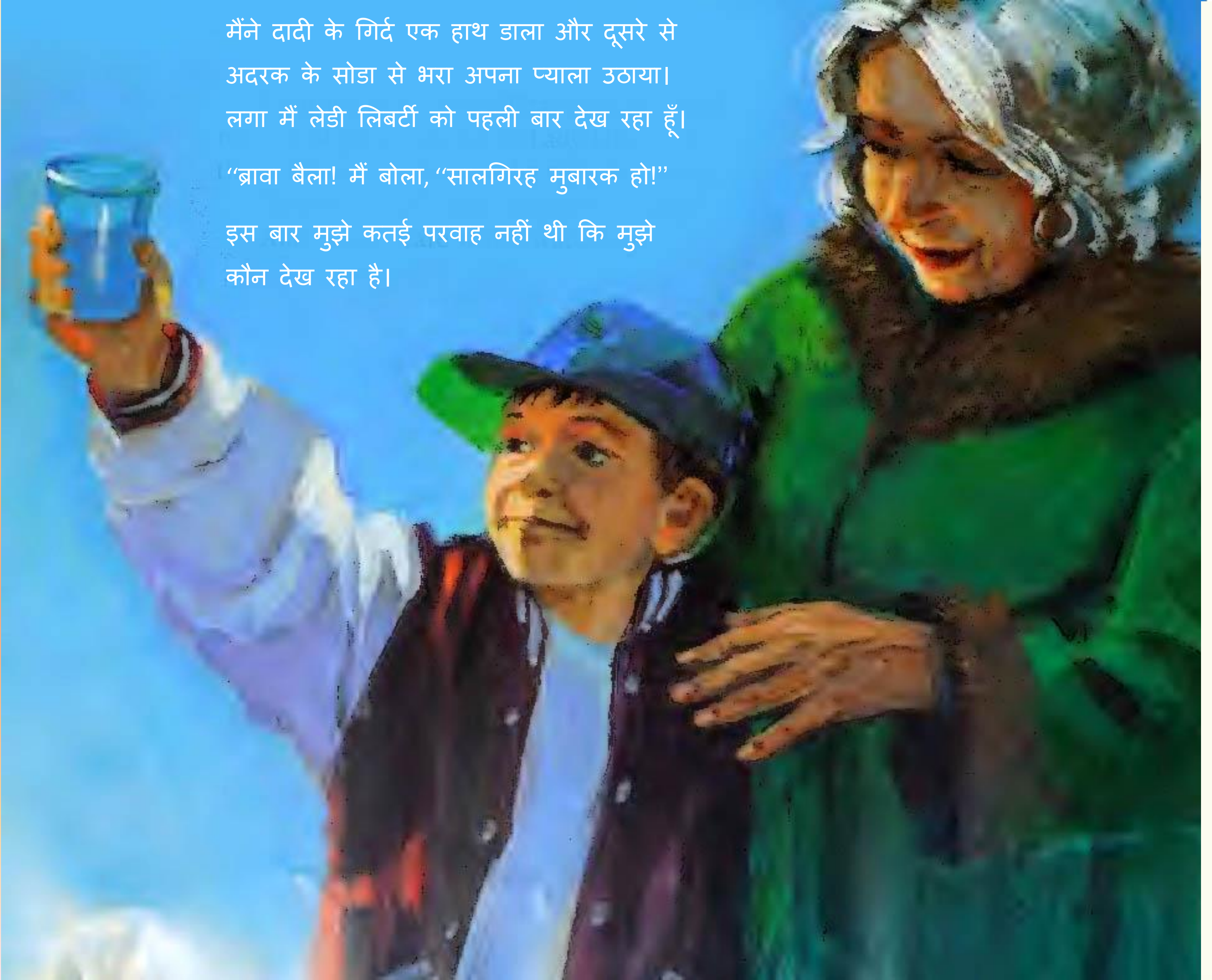




मुझे चटक रंग की लम्बी स्कर्ट पहने वह महिला अपनी छोटी बच्ची और पुरुष के साथ नज़र आ गई। मैं मुस्कराया। "देखो! वे वहाँ हैं। आख़िर वे पहुँच ही गए।"

दादी ने शान्त भाव से हाँ में सिर हिलाया। "लगे शर्त, वे नए अमरीकी हैं। मुझे पता है कि उन्हें कैसा महसूस हो रहा होगा," वे बोलीं।

वे तीनों सिर उठा प्रतिमा को निहार रहे थे। तब उस पुरुष ने कुछ कहा, उन्होंने एक-दूसरे का हाथ थामा और सिर झुका लिए। वे इतने स्थिर, सम्मान के साथ इतने शान्त खड़े थे, कि मेरा दिल भर आया। हो सकता है कि वे एक लम्बे सफ़र के बाद आए हों। बैटरी पार्क से भी कहीं दूर से यहाँ लिबर्टी टापू तक आए हों।



मैंने दादी के गिर्द एक हाथ डाला और दूसरे से अदरक के सोडा से भरा अपना प्याला उठाया। लगा मैं लेडी लिबर्टी को पहली बार देख रहा हूँ।

"ब्रावा बैला! मैं बोला, "सालगिरह मुबारक हो!"

इस बार मुझे कतई परवाह नहीं थी कि मुझे कौन देख रहा है।



ईव बन्टिंग को स्टैच्यू ऑफ लिबर्टी की अपनी पहली झलक याद है, जब वे आयरलैण्ड से न्यू यॉर्क के घाट पर पहुँची थीं। सो वे बख़ूबी जानती है कि दादी की उस प्रतिमा के बारे में क्या भावना है। मिज़ बन्टिंग अब पासाडीना में रहती हैं। उन्होंने बच्चों के लिए 150 से भी अधिक क़िताबें लिखी हैं। इनमें *योर मूव* (1998) जिसके चित्र जेम्स रैनसम ने बनाए थे; *द डे द व्हेल केम* (1998), जिसे स्कॉट मैंचिन ने चित्रित किया था; और *ट्विनीस्* (1997), जिसके चित्र नैन्सी कार्पेन्टर ने बनाए थे, शामिल हैं।



नैन्सी कार्पेन्टर ब्रुकलिन में रहती हैं और इस क़िताब के लिए आसानी से अपनी शोध कर पाईं। वे अपने मुहल्ले से स्टैच्यू ऑफ लिबर्टी को देख सकती हैं। मिज़ कार्पेन्टर ने बच्चों के लिए कई प्रशंसित क़िताबों को चित्रित किया है। इनमें वर्जिनिया क्रोल की रचना *मसाई एण्ड आई*; ब्रिग्स मार्टिन रचित *वॉशिंग द विलो ट्री लून*; तथा ईव बन्टिंग की रचना *ट्विनीस्* शामिल हैं।